:: भूमिका ::

प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी साहित्य में जिन रचनाकारोंने हिन्दी भाषा और साहित्य को अपने योगदान से समृध्द किया ऐसे रचनाकारों में भगवतीचरण वर्मा एक है। कथा, कविता, उपन्यास, नाटक, एकांकी, संस्मरण आदि विधाओं में उन्होंने अपनी बहुमुखी प्रतिभा का परिचय दिया है। भारत सरकारने उन्हें "पद्मभूषण" पुरस्कार देकर उनका सम्मान किया है। उनका "भूले-बिसरे" चित्र उपन्यास साहित्य अकादमी व्दारा पुरस्कृत किया गया है।

इस महान साहित्यकार का जन्म 30 अगस्त 1903 में उत्तरप्रदेश में उन्नाव जिले के शफीपुर नामक गाँव में हुआ। आर्थिक और पारिवारिक समस्याओं के बीच आत्म-विश्वास और हिम्मत के साथ खडे रहकर उन्होंने अपना जीवन यापन किया। अपने जीवन-काल में उन्होंने हिन्दी साहित्य क्षेत्र में अनेक मौलिक रचनाओं को जन्म दिया और अपना अमर स्थान बनाया।

अक्तूबर 1981 में 78 बरस की आयु में कर्करोग के कारण इस महान साहित्यकार का देहान्त हुआ।

लेखिका डॉ. कुसुम वार्ष्णेय ने अपनी किताब "भगवतीचरण वर्मा:'चित्रलेखा'से 'सीधी सच्ची बातें'तक"की भूमिका में वर्माजी के साहित्य की महानता को सूचित करते हुए लिखा है-" क्या नहीं है उनके साहित्य में? उसमें एक स्वस्थ जीवन-दर्शन है। विकृतीयों से वितृष्णा और अच्छाई को अपनाने की प्रेरणा है।"

संयोगवश मैंने वर्माजीकी "प्रायश्चित्त","इन्स्टालमेन्ट","राख और चिनगारी", और "कुंवर साहब मर गये।" ये चार कहानियाँ पढ़ी थीं। इन कहानियों से मैं इतनी अधिक प्रभावित हुई कि, जब लघु-शोध प्रबंध के विषयचयन का समय आया तब मैंने तुरन्त-

"भगवतीचरण वर्माजी की कहानियों में प्रतिबिंबित समाज-जीवन" यह विषय निश्चित किया। जब मैंने इस विषय का प्रस्ताव श्रध्देय गुरुवर्य प्राचार्य डा.बी.बी. पाटीलजी के सम्मुख रखा तो आपने स्वीकृति दे दी तथा विषय की गहराई के प्रति मुझे सचेत किया।

इस लघु-शोध प्रबंध में भगवतीचरण वर्मा की कहानियों में चित्रित समाज-जीवन

को समग्रता से उद्घाटित करने का प्रयत्न किया है। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध को मैंने पाँच अध्यायों में विभाजित किया है।

पहले अध्याय में भगवतीचरण वर्मा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की चर्चा की है। इसमें उनकी प्रामाणिक जीवनी एवं व्यक्तित्व को प्रस्तुत करते हुए उनके कृतित्व को प्रस्तुत किया है।

दूसरे अध्याय में वर्माजी की "इन्स्टालमेन्ट", "दो बाँके", "मेरी प्रिय कहानियाँ", "प्रतिनिधी कहानियाँ", "मोर्चाबन्दी" इन किताबों में प्राप्त 49 कहानियों का संक्षिप्त परिचय दिया है।

तीसरे अध्याय में उनकी कहानियों में प्रतिबिंबित समाज-जीवन का अध्ययन करते समय उच्च वर्ग, मध्यवर्ग, निम्न वर्ग, नारी-चित्रण, धर्म, अंधश्रद्धा, रूढ़ी-परम्परा तथा अन्य बातों के साथ वर्तमान समाज में दिखाई देनेवाले भ्रष्टाचार तथा गिरते नैतिक मूल्योंपर प्रकाश डाला गया है।

चौथे अध्याय में उनकी कहानियों में चित्रित सामाजिक समस्याओं के अन्तर्गत नारी समस्या, आर्थिक समस्या, धार्मिक समस्या, राजनीतिक समस्या, तथा स्वतंत्रता-प्राप्ति की समस्या आदि का विश्लेषण किया है।

पाँचवे अध्याय में उपसंहार के अंतर्गत सम्पूर्ण अध्ययन के निष्कर्षों को प्रस्तुत किया है।

यह लघु-शोध प्रबंध मेरे गुरुवर्य प्राचार्य डा. बी. बी. पाटीलजी, के आत्मिय एवं प्रेरक निरीक्षण और निर्देशन का प्रतिफलन है। लघु-शोध प्रबंध के विषय-निर्धारण से लेकर उसकी पूर्ति होने तक उनका जो आत्मिय और मौलिक मार्गदर्शन मिला वह अविस्मरणीय है। उनकी सहायता, प्रेरणा और मार्गदर्शन के कारण मैं अपना यह कार्य दृढ़ता के साथ करने में कामयाब हो गई। अतः मैं उनकी बहुत ऋणी हूँ। लेकिन उनके ऋण से उऋण होना नहीं चाहती, केवल उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना चाहती हूँ।

लघु-शोध प्रबंध का कार्य करते समय मेरे श्रध्दास्थान श्रध्देय ससुरजी, पिताजी, माता तथा पति मुझे समय-समय पर प्रोत्साहित करते रहे और अपना हार्दिक सहयोग दिया। जिसके कारण मैं यह लघु-शोध प्रबंध पूर्ण करने में सफल हो सकी। अतः मैं उनके प्रति सविनय कृतज्ञता प्रकट करती हूँ।

प्रा.श्री. तंभाजी पाटील (कोपरगाव), प्रा.सौ.प्रज्ञा पाटील(कोपरगाव), प्रा.श्री.हवालदार(मिरज), प्रा.श्री.डांगे (कोल्हापुर), हमारे पड़ोसी श्री.एस.पी. रताड और मेरे घरके सभी सदस्यों का समय-समय पर सहयोग मिलता रहा अतः मैं उनके प्रति भी आभार प्रकट करती हूँ।

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, महावीर कॉलिज कोल्हापुर, के ग्रंथालयों से मुझे अतीव सहायता मिली। मैं उन ग्रंथपालों के प्रति हार्दिक धन्यवाद प्रकट करती हूँ।

मैं उन सभी ग्रंथलेखकों और मित्रों की आभारी हूँ जिन्होंने परोक्ष-अपरोक्ष सहयोग देकर मुझे उपकृत किया।

श्रद्धेय प्रा.श्री. व्ही. के. गोरे (हिन्दी विभागाध्यक्ष, शाहू कॉलिज,कोल्हापुर) जी की मैं सविनय आभारी हूँ, जिन्होंने शुरू में मुझे प्रोत्साहित किया और मेरा हौसला बढ़ाया।

यह लघु-शोध प्रबंध टंकलिखित करने का कार्य टंकलेखक श्री. विजयानन्द पाटील और श्री. प्रसाद पाटील (जे. जे. टाईपरायटिंग इन्स्टिटयूट,कोल्हापुर) ने किया इनकी भी मैं आभारी हूँ।

मैं इस लघु-प्रबंध में अनजाने में रह गई त्रुटियों को और गलतियों को स्वीकार करते हुए यह लघु-शोध प्रबंध आपके सामने प्रस्तुत करती हूँ।

कोल्हापुर,
दिनांक:- 27 / 11 / 1990

(सौ. स्नेहल दि. पाटील)
शोध छात्रा